B.A. Part I
Hindi Hons
नवल की कविता

डॉ० अनन्त कुमार
5/11/20
हिन्दी विभाग

संसार मोक्ष आदि का विवेचन होता है। ब्रह्म सम्प्रदाय में उसे शुद्धाद्वैत सिद्धान्त कहा गया है। सेवा पक्ष में तीन स्वरूप माने गये हैं गुरु सेवा, संत सेवा तथा प्रभु सेवा। संत सेवा से सम्बन्ध सूरसागर में बहुत है। गुरु की आवश्यकता सूर ने अनिवार्य बतलाई है तथा गुरु का स्थान भक्ति धर्म में बहुत ऊँचा माना है। गुरु भक्ति भगवद्भक्ति का प्रधान लक्षण है। सूर कहते हैं:-

" नर ते जनम पाई कह कीनों।

× × × ×

श्रीमद्भागवत सुनि नहिं श्रवन निगुरु गोविन्द नहीं चीन्हीं।।"

" जनम तौ वादिहि गयौ सिराई।

× × × ×

हरि सुमिरन नहीं गुरु की सेवा, मधुवन बस्यौं न जाई।।"

सद्गुरु का उपदेश ही हृदय में धारण करना चाहिए, क्योंकि वह सकल भ्रम का नाशक होता है -

" सद्गुरु को उपदेश हृदय धरि जिन भ्रम सकल निवार, ऊँचे टेर पुकारयौं।"

संसार में माया रूपी भुजंगिनी बड़ा उत्पात मचाये हुए है। उसने मनुष्यों को डँसकर अपने तीक्ष्ण विष का घातक प्रभाव डाला है। कोई मंत्र काम नहीं कर सकता, केवल गुरुरूपी गारुड़ी कृष्णरूपी मंत्र के द्वारा विष को दूर कर सकता है -

" अजहुँ सावधान किन होई।

× × ×

बार-बार निकट सुवननि है गुरु गारुडी सुनायौ।।"

इन्द्र और वृत्रासुर कथा के अनन्तर भी सूर ने गुरु महिमा का प्रतिपादन किया है। कवि कहता है कि हरि और गुरु एक ही स्वरूप हैं और हरि के प्रसन्न होने से गुरु प्रसन्न होते हैं। गुरु के बिना सच्ची कृपा करने वाला कौन है। गुरु भव सागर में डूबते हुए को बचाने वाला और सत्पथ का दीपक है। वामन दास हरण लीला के प्रसंग में भी सूर ने गुरु के महत्त्व को स्वीकार किया है -

क्रमशः —

B.A. Part 1
Hindi Hons
सेवा की भावना

5/11/20 डॉ० अनुपमा कुमारी
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी

लौकिक कामनाओं से प्रयोजन रखते हुए श्रीकृष्ण की सेवा में तत्पर होते हैं, इसलिए उन्हें कष्ट होता है, परन्तु पुष्टिमार्गीय भक्त सब प्रकार से भगवान को आत्म समर्पण कर मोक्ष और मुक्ति से दूर रहकर भगवान कृष्ण की उपासना में लगा रहता है।

श्रीमद्भागवत में मर्यादा भक्ति और पुष्टिभक्ति का विवेचन हुआ है। मर्यादा भक्ति का फल है कि प्राप्ति देखकर उसकी कल्पना की जाती है। भागवत के छठे स्कन्ध में भगवत् अनुग्रह का विस्तृत वर्णन मिलता है। पुष्टि सम्प्रदाय में सेवा का बड़ा महत्व है। वास्तव में सेवा विधि सम्प्रदाय की प्रधान मौलिकता है। सेवा के महत्व पर वल्लभाचार्य जी ने स्थान स्थान पर लिखा है- कृष्ण सेवा सदा कार्या मानसी सा परामता अर्थात् कृष्ण की सेवा करनी चाहिए, वह सेवा मानसी होनी चाहिए जो पूरा अर्थात् फलस्वरूपा है। फिर दूसरे श्लोक में सेवा का स्वरूप बतलाते हुए आचार्य जी कहते हैं- "चेतस्तत्प्रवणं सेवा" अर्थात् हरि में चित्त को पिरोना ही पुष्टि मार्गीय सेवा के विषय पर हरिराय जी ने विशेष प्रकाश डाला है। हरिराय मुक्तावली में लिखते हैं- तीन प्रकार की प्रभु सेवा ही फलरूपिनी है और जो निरोधरूपा भी है तथा यह व्रजभक्तों में दिखाई देती है। शारीरिक सेवा में भक्त अपना शरीर भगवान के लिए अर्पण करता है और   में वह अपनी धन-सम्पत्ति को भगवान को अर्पण कर देता है, पर मानसी सेवा में हरिराय जी लिखते हैं-

"वाह्याप्तकृतौ वियोगेनास्ते हृदय देशगे।
रसात्मक प्रभोरत्न प्रादुर्भाव: स्वतो भवेत्॥"

जब भक्त के हृदय में भगवान से मिलने में विकलता के कारण विप्रयोग उत्पन्न होता है, तब प्रभु हृदय में सम्पूर्ण लीला का अनुभव करते हैं और फिर स्वत: ही रसात्मक प्रभु का प्रादुर्भाव हृदय में हो जाता है।

सूरदास और पुष्टिमार्ग -

हम पहले देख चुके हैं कि पुष्टि सम्प्रदाय के दो पक्ष हैं- सिद्धान्त पक्ष और सेवा पक्ष। सिद्धान्त-पक्ष में जीव, ब्रह्म, जगत